RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

भारतेंदु युगीन राष्ट्रीय नव जागरण में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान

डॉ0 संयुक्ता

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविघालय, आरा

परिचयः

पत्रकारिता और नवजागरण एक दूसरे के पर्याय है। नवजागरण युगीन चेतना है तो पत्रकारिता उस चेतना को सर्वव्यापी बनाने का माध्यम है। किसी भी प्रकार के नवजागरण के लिए पत्र–पत्रिकाएं नितान्त आवश्यक हैं। नवजागरण के लिए सचेष्ट कोई भी लेखक अपने विचारों, भावनाओं को पत्रकारिता के माध्यम से ही जन–जन तक पहुंचाता है।

ब्रिटिश राज्य की स्थापना के कारण भारत की अर्थ–नीति, शिक्षा पद्धति, सामाजिक–संरचना तथा यातायात के साधनों आदि में बुनियादी परिवर्तन हुए। इसके फलस्वरूप समाज का जो आधुनिकीकरण आरम्भ हुआ, वह पुराने धार्मिक संस्कारों के बीच सामंजस्य की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। इस सामंजस्य के साथ ही नये भारतीय समाज के निर्माण की प्रकिया आरम्भ हुई। ये जो सामंजस्य के प्रयास किए पत्रकारिता के द्वारा ही संभव हो सके।

नवजागरण और हिन्दी पत्रकारिताः

'राष्ट्रीय नवजागरण' में महत्वपूर्ण योगदान हिन्दी पत्रकारिता की रही है। राष्ट्रीय नवजागरण के संचार स्रोत हिन्दी पत्रकारिता थी जिनमें दिग्भ्रमित जनता को गन्तव्य पथ दिखलाकर राष्ट्रभक्ति को जन्म दिया। पत्र–पत्रिकाओं में विदेशी शासन की कूटनीति के दुर्ग को ध्वस्त कर जनमानस में अभूतपूर्वक जागृति जगा दी थी।

राष्ट्रीय नवजागरण और पत्रकारिता परस्पर पूरक थे जिसके गठबंधन से स्वाधीन भारत के पृष्ठभूमि निर्मित हुई। ए. आर. देसाई ने लिखा है कि – "भारतीय जनता के बीच राष्ट्रीय भाव और चेतना के उदय और उत्थान में, उनके राष्ट्रीय आंदोलन के संगठन और विकास, प्रादेशिक साहित्यों और संस्कृतियों की सृष्टि में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

वस्तुतः पत्रकारिता सशक्त आवाज के बिना राष्ट्रीय चेतना, ऐक्ट, राजनीतिक स्वाधीनता, राष्ट्र का विकास आदि लक्ष्य की कल्पना करना भी कठिन है। ग्राम, नगर के हर घर–आंगन में देश के लिए प्राणों की बाजी लगाने की अलख जगाना तथा स्वाधीनता के लिए देशभक्ति, एकता की लौ प्रज्वलित किए रखना हिन्दी पत्रकारिता का ही कार्य था। पत्रकारिता ने देशवासियों को अटूट निद्रा से जगाकर खड़ा कर दिया। तत्कालीन पत्रकारिता ने समय के अनुरूप कभी–कभी राजभक्त होने का स्वर्ग करते थे, पर अपने दायित्व को कभी विस्मृत नहीं किया। पत्रकारिता ने न साम्राज्यवाद से मिलीभगत की न कभी संघर्ष कर्तव्य से डिगे,न ही अंग्रेजों से दया की भीखमांगी, बल्कि इनके विरूद्ध निरन्तर विपन्नता के सायें में भी दृढ़तापूर्वक अपने अस्तित्व को बनाए रखा। पत्रकारिता के एक–एक शब्द में देश के प्रति प्रतिबद्धता झलकती है। युगीन पत्रकारिता ने राष्ट्रीय जागरण कालीन पत्रकारिता व्यापार के लिए नहीं, राष्ट्रीय चेतना के लिए थी।

उन्नीसवीं शताब्दी भारत के लिए सांस्कृतिक पुनर्जागरण का काल था जब भारतीय राष्ट्रवाद की तीव्रधारा को उसके सुधार आंदोलनों नें अभूतपूर्व बल प्रदान किया। इन सुधार आंदोलनों के नेता पत्रकार थे। उन्होंने ने अपनी पत्रकारिता के द्वारा समाज की कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। इन सुधारकों का मानना था कि भारतीय समाज एवं धार्मिक व्यवस्था में सुधार किए बिना राजनीतिक जागरण असम्भव है। "राजा राममोहन राय ने 'ब्रह्म समाज' तथा अपने पत्रकारिता के द्वारा जो कार्य किया वह उन्हे भारतीय राष्ट्रीयता का अग्रदूत होने का श्रेय प्राप्त कराता हे।"

राष्ट्रीय नवजागरण में हिन्दी पत्रकारिता से महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसका लाभ निश्चित रूप से राष्ट्रीय आंदोलन को मिला। इन पत्र–पत्रिकाओं ने आम जनता की स्वाभिमान जागृति में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। लोगों के मन में विदेशी संस्कृति, समान और सबसे बढ़कर विदेशी शासन के विरूद्ध विद्रोह की भावना जगायी। पत्रकारिता ने सुषुप्त पड़ गयी जनता को फिर से जगाया। उन्होंने प्रत्येक प्रकार से जागरण का प्रयास किया। पत्रकारों ने आर्थिक महत्व को समझते हुए स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग का सलाह दिया तथा जनता को सावधान किया–

"अंग्रेज राज सुख साज सजे बहुआरी।
पै धन निदेश चलि जातय है अति ख्वारी।"

इसी प्रकार प्रताप नारायण मिश्र ने लिखा है–

"अपनो काम अपने ही हाथक भल होई
परदेशियन पर धर्मिन ते आशा नहिं कोई"

बग–यंग (1905) ने राष्ट्रीय नवजागरण का महत्वपूर्ण कार्य किया और सरकार की दमन नीति ने उसके विकास का अनुकूल वातावरण तैयार किया। उसी समय स्वदेशी–आंदोलन के माध्यम से संपूर्ण जातीय चेतना को अभिव्यक्ति भी मिली।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

उसी समय 'भारतमित्र' में 'स्वदेशी आंदोलन' शीर्षक से एक कविता प्रकाशित हुई जो इस प्रकार थी–

"भोग विलास सभी को छोड़, बाबूपन से मूंह लो मोड़
छोड़ों सभी विदेशी माल अपने घर का करो माला।
अपनी चीजें आप बनाओं, उनसे अपना अंग सजाओ
भजो बंग माता का नाम; जिससे भला हो अंजाम ।।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि यहां पर 'भारत मित्र' ने सभी प्रकार से जागरण का प्रयास किया है। द्विवेदी युग में निकलने वाली पत्रिका 'नृसिंह' अपने एक लेख में आह्वान किया है– "आवे समस्त देशवासियों हमलोग उपनिवेश ओर उसके पिट्टू इंगलैंड की वस्तुओं का बहिष्कार करें, जिससे उन्हे जान पड़े कि हिन्दुस्तानी निरे मुर्दे नहीं है। हमलोग दिखा दें कि हम आत्माभिमानी हैं और तुम्हें तुम्हारे पाप कर्मो का फल चखने को बद्ध परिकर है। मद्रास ने इस विषय का श्री गणेश किया है। जो प्रान्त वा प्रदेश इस समय अपने कर्तव्य से च्युत होगा, उसका नाम सदा के लिए कलंकित हो जाएगा। इस प्रकार यह पत्र जहां एक ओर विदेशी वस्तु के त्याग की प्रेरणा देकर अंग्रेजी राज की रीढ़ तोड़ना चाहता है वही स्वदेशी अपनाने का सलाह देकर भारत की आर्थिक स्थिति मजबूत करना चाहता है।

पत्रकारिता ने साहित्य के द्वारा जागरण का प्रयास किया। 'सरस्वती' ने अपनी भाषा और साहित्य के रूप में हिन्दी का मान बढ़ाया। उस समय के तमाम लेखकों–कवियों ने अपने सभी प्रकार के जागरण वाले लेखक और कविताएं इसी साहित्यिक पत्रिका में प्रकाशित किया।

इस प्रकार पत्रकारिता नव जागरण की सशक्त माध्यम रही है। इसके बिना नव जागरण का प्रयास असम्भव सा प्रतीत होता है। हम देखते हैं कि राष्ट्रीय जागरण काल की पत्र–पत्रिकाओं ने नव जागरण का अथक और सराहनीय प्रयास किया, जिसके फलस्वरूप हमारी विभिन्न चेतनाएं जागृत हो सकीं।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः नवजागरण मानव या राष्ट्र की आत्मा, मन, मस्तिष्क की चैतन्यावस्था का प्रतीक है। यह मानव जीवन व विचार जगत में नूतनता का संचरण है। यह जनमानस की एक विविध सामाजिक संस्थाओं ने योगदान दिया। सामाजिक विसंगतियों, धार्मिक कुरीतियों पर प्रहार कर समाज के हर वर्ग को दिशा प्रदान की। प्रार्थना समाज, ब्रह्म समाज, आर्य समाज आदि ने राष्ट्रीय आंदोलन के प्रेरक तत्व के रूप में कार्य किया। भारतीय नवजागरण की विशेषता रही– राष्ट्रीय एकता, जनहित, स्वाधीनता की आकांक्षा, धर्मनिरपेखता, लौंगिक समानता की पक्षधरता, औद्योगीकरण की पक्षधरता, स्वदेशी भाषा का पोषक आदि। राष्ट्रीयता की नवजागरण के केन्द्र में रही। भारतीय नवजागरण की समय सीमा 1828 ई0 से 1947 ई0 तक निर्धारित मानी गयी है। इस काल में स्वतंत्रता का आकांक्षी जनमानस विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से राष्ट्रीय का हिमायती बन गया। 1828 से 1947 ई0 तक समाज सुधार नवजागरण का प्रमुख उदेश्य रहा। राष्ट्र के विकास के लिए स्वाधीनता ही पहली शर्त थी। नवजागरण के पूर्व समाज विश्रृंखल था। ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटिश सरकार की नीतियां शोषण पर आधारित थीं। आर्थिक दोहन कर वे भारत को खोखला बना रहे थे। नवजागरण के पूर्व की स्थिति ब्रिटिश सता पर निर्भर रही जो विकास कार्य किए वह उनके उदेश्यों में सहायक थे। नवजागरण का स्फूटन तो ब्रिटिश सता के घात–प्रतिघात का ही परिणाम रही। 1947 की स्वीधीनता ने औपनिवेशिक शासक को ही नहीं उखाड़ा बल्कि स्वाधीन भारत की कल्पना को यथार्थ में बदला। स्वाधीन भारत की संकल्पना राष्ट्रीय चेतना की जागृति से सफल हुई। पत्रकारिता और साहित्य ने अपने माध्यम से नवजागरण लाने का प्रयास किया। सरकार की दमन नीति के विरूद्ध अनुकूल वातावरण तैयार किया। आर्थिक महत्व को समझते हुए स्वदेशीपन पर जोर दिया। वस्तुतः नवजागरण के विकास के लिए पत्र–पत्रिकाओं ने सराहनीय प्रयास किया।

संदर्भ:

1. सं–डॉ0 नागेन्द्र, हिन्दी सहित्य का इतिहास, पृ0 439
2. नार्मन डी. पाभर– मेजर गर्वनमेण्ट ऑफ एशिया, पृ0 280
3. डॉ0 शान्ति प्रकाश वर्मा– द्वितीय भारतेंदु : पंडित प्रताप नारायण मिश्र, पृ0 89
4. कृष्ण बिहारी मिश्र : हिन्दी पत्रकारिता, पृ0 242
5. नृसिंह, अंक–4, (लेख–स्वराज की आवश्यकता)